नवभारत
| संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्त्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी |

आतंकवाद पर निरंतर सख्त कार्रवाई जरूरी

राष्ट्रीय जांच एजेंसी (एनआईए) द्वारा लश्कर-ए-तैयबा के शीर्ष आतंकी हाफिज सईद के दो करीबी सहयोगियों सहित 23 आतंकियों को आतंकवादी घोषित किया जाना भारत की आतंकवाद विरोधी नीति का एक महत्वपूर्ण कदम है. इस सूची में जम्मू-कश्मीर से लेकर कर्नाटक के बेंगलुरु तक फैले ऐसे तत्व शामिल हैं, जो प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से आतंकवादी गतिविधियों, भर्ती, कट्टरपंथ के प्रचार और आतंकी संगठनों को सहयोग देने में सक्रिय रहे हैं. यह कार्रवाई स्पष्ट संकेत देती है कि भारत अब केवल सीमा पार से होने वाले हमलों का जवाब देने तक सीमित नहीं है, बल्कि आतंकवाद के पूरे तंत्र को ध्वस्त करने की दिशा में आगे बढ़ रहा है.

पिछले एक दशक में भारत ने आतंकवाद के विरुद्ध अपनी रणनीति में व्यापक बदलाव किया है. सुरक्षा बलों की कार्रवाई, खुफिया एजेंसियों के बीच बेहतर समन्वय, आधुनिक तकनीक का उपयोग और आतंकवाद के वित्तीय स्रोतों पर प्रहार ने आतंकी संगठनों की क्षमता को काफी हद तक कमजोर किया है. अनुच्छेद 370 हटने के बाद जम्मू-कश्मीर में सुरक्षा व्यवस्था और अधिक मजबूत हुई है तथा अनेक आतंकी मॉड्यूल समय रहते ध्वस्त किए गए हैं.

हालांकि, चुनौती अभी समाप्त नहीं हुई है. आतंकवादी संगठन अब सोशल मीडिया, एन्क्रिप्टेड मैसेजिंग प्लेटफॉर्म और डिजिटल माध्यमों का उपयोग कर युवाओं को गुमराह करने का प्रयास कर रहे हैं. कट्टरपंथी विचारधारा का प्रसार, फर्जी प्रचार और ऑनलाइन भर्ती आज सुरक्षा एजेंसियों के सामने नई चुनौती बन चुके हैं. इसलिए केवल हथियारबंद आतंकियों के खिलाफ कार्रवाई पर्याप्त नहीं है, बल्कि उनके वैचारिक और डिजिटल नेटवर्क को भी पूरी तरह समाप्त करना होगा.

यह भी ध्यान रखना होगा कि आतंकवाद केवल कानून-व्यवस्था का विषय नहीं, बल्कि राष्ट्रीय सुरक्षा, सामाजिक सद्भाव और आर्थिक विकास से जुड़ा प्रश्न है. किसी भी प्रकार की राजनीतिक या वैचारिक सहानुभूति आतंकवाद के लिए स्थान नहीं छोड़ सकती. लोकतंत्र में मतभेदों की पूरी गुंजाइश है, लेकिन हिंसा और आतंक को किसी भी परिस्थिति में वैधता नहीं दी जा सकती.

आतंकवाद के विरुद्ध लड़ाई में अंतरराष्ट्रीय सहयोग भी उतना ही आवश्यक है. भारत लंबे समय से उन देशों और संस्थाओं पर दबाव बनाता रहा है, जो आतंकवाद को प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष संरक्षण देते हैं. वैश्विक मंचों पर भारत की सक्रिय कूटनीति का परिणाम है कि आज अनेक देशों ने आतंकवाद के खिलाफ साझा कार्रवाई की आवश्यकता को स्वीकार किया है. फिर भी, जब तक आतंकवाद को राजनीतिक हितों का साधन बनाने की प्रवृत्ति समाप्त नहीं होगी, तब तक यह खतरा पूरी तरह खत्म नहीं होगा.

एनआईए की ताजा कार्रवाई का महत्व केवल 23 आतंकियों को सूचीबद्ध करने तक सीमित नहीं है. इसका संदेश उन सभी तत्वों के लिए है, जो देश की शांति और सुरक्षा के खिलाफ षड्यंत्र रचते हैं. ऐसे लोगों को यह स्पष्ट संकेत मिलना चाहिए कि कानून की पहुंच से कोई भी बाहर नहीं है और आतंकवाद से जुड़े प्रत्येक व्यक्ति को उसके अपराधों का परिणाम भुगतना होगा.

आतंकवाद के विरुद्ध यह संघर्ष लंबा और सतत है. इसमें सुरक्षा एजेंसियों की सतर्कता, सरकार की दृढ़ इच्छाशक्ति, न्यायिक प्रक्रिया की प्रभावशीलता और नागरिकों का सहयोग समान रूप से आवश्यक है. भारत को इसी समन्वित दृष्टिकोण के साथ आगे बढ़ना होगा, ताकि आतंकवाद की हर जड़ को समाप्त कर सुरक्षित, शांतिपूर्ण और सशक्त राष्ट्र का निर्माण किया जा सके.

डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी की 125वीं जयंती आज

मां भारती के प्रति समर्पित जीवन

नरेंद्र मोदी, प्रधानमंत्री

> कोलकाता के एक कॉलेज में युवाओं को संबोधित करते हुए डॉ. मुखर्जी ने उनसे आग्रह किया था, ''आप जो भी कार्य करें, उसे पूरी गंभीरता, लगन और ईमानदारी से करें. किसी भी काम को कभी अधूरा न छोड़ें. तब तक स्वयं को संतुष्ट न मानें, जब तक आपने उसमें अपना सर्वश्रेष्ठ योगदान न दे दिया हो.'' आज हमारा देश विकसित भारत के लक्ष्य की ओर तेजी से आगे बढ़ रहा है.ऐसे में उनके प्रति हमारी सच्ची श्रद्धांजलि यही होगी कि हम प्रतिदिन उसभारत के निर्माण की दिशा में निरंतर प्रयास करें, जिसकी उन्होंने परिकल्पना की थी. एक ऐसा भारत जो सशक्त हो, एकजुट हो, आत्मविश्वास से भरपूर और संवेदनशील हो. देश के युवाओं पर मुझे पूरा विश्वास है कि वे इस लक्ष्य को पूरा करने के लिए बढ़-चढ़कर भागीदारी करेंगे और इस संकल्प को साकार करने के लिए पूरी ऊर्जा के साथ जुट जाएंगे.

आज, 6 जुलाई का दिन राष्ट्रवाद और निस्वार्थ सेवा के आदर्शों में विश्वास रखने वाले करोड़ों देशवासियों के लिए बहुत ही विशेष है. आज हम डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी की 125वीं जन्म-जयंती मना रहे हैं. उनका जीवन साहस और मां भारती के प्रति अटूट समर्पण का प्रेरणादायक उदाहरण है. डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी के व्यक्तित्व में विद्वता, जनसेवा और उच्च नैतिक मूल्यों का अद्भुत संगम था. आधुनिक भारत के कुछ ही नेताओं में इतने सारे गुण एक साथ देखने को मिलते हैं.

श्यामा प्रसाद जी का जन्म ऐसे परिवार में हुआ था, जहां उन्हें सुख-सुविधाओं से भरपूर जीवन आसानी से मिल सकता था. उनके पिता सर आशुतोष मुखर्जी की गिनती अपने समय के महान शिक्षाविदों में होती थी. लेकिन तमाम सुविधाओं के बावजूद श्यामा प्रसाद जी ने त्याग और राष्ट्रसेवा का मार्ग चुना.

उनका दृढ़ विश्वास था कि चाहे अंग्रेजी शासन का विरोध हो, सांप्रदायिकता से लड़ाई हो या मानवीय संकटों का सामना, वे अपने समय की इन चुनौतियों के सामने मूकदर्शक बनकर नहीं रह सकते. इस सफर में उन्हें कई गहरे व्यक्तिगत दुख भी झेलने पड़े. पहले उन्होंने अपने छोटे बच्चे को खोया और बाद में पत्नी का भी निधन हो गया. लेकिन इन दुखद परिस्थितियों में भी उन्होंने अपने हौसले को कमजोर नहीं पड़ने दिया. उनका संकल्प और सशक्त हुआ, राष्ट्रसेवा के प्रति समर्पण और गहरा होता गया.

डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी के जीवन का सबसे बड़ा उद्देश्य भारत की एकता और अखंडता की रक्षा करना था. देश के विभाजन के समय उन्होंने पश्चिम बंगाल को भारत का अभिन्न अंग बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई. कुछ वर्षों बाद इसी उद्देश्य से उन्होंने जम्मू-कश्मीर के मुद्दे पर भी संघर्ष किया. जेल और नजरबंदी भी उन्हें रास्ते से डिगा नहीं सकी. जब नजरबंदी के दौरान उनका निधन हुआ, तब वे उन अनगिनत लोगों से बहुत दूर थे, जिनके लिए वे जीवनभर संघर्ष करते रहे. इतिहास में कुछ ऐसे पल आते हैं, जब किसी व्यक्ति का सर्वोच्च बलिदान राजनीति से ऊपर उठकर देश की स्मृति का हिस्सा बन जाता है. डॉ. मुखर्जी का बलिदान भी ऐसा ही था. आचार्य विनोबा भावे ने कहा था कि डॉ. मुखर्जी ने उस उद्देश्य के लिए अपना बलिदान दिया, जिस पर उन्हें पूरा विश्वास था. दशकों बाद, साल 2019 में आर्टिकल 370 और 35() को हटाया जाना उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि थी.

डॉ. मुखर्जी ने हमेशा राष्ट्रहित और भारतीय मूल्यों को सर्वोच्च प्राथमिकता दी. इसके लिए उन्होंने मजबूत संस्थानों का निर्माण किया और ऐसी व्यवस्थाएं बनाईं, जो उस समय की सोच से काफी आगे थीं. वे कलकत्ता विश्वविद्यालय के सबसे युवा कुलपति बने. उन्होंने शिक्षा व्यवस्था में ऐसे बदलाव किए, जो राष्ट्रहित और भविष्य की जरूरतों के अनुरूप थे. शिक्षाविदों के एक सम्मेलन में डॉ. मुखर्जी ने कहा था, ''शिक्षण संस्थानों को केवल बाबू या कम वेतन वाले कर्मचारी तैयार करने की फैक्ट्री समझना गलत है. हमें विद्यार्थियों को ऐसे तैयार करना होगा ताकि वे नेतृत्व की भूमिका निभा सकें. हमारी स्वशासी संस्थाओं जैसे म्युनिसिपल कॉरपोरेशन्स, प्रांतीय और केंद्रीय विधायिकाओं में बड़ी जिम्मेदारी निभाने के लिए तैयार हो सकें. इसके साथ ही वे वित्त, व्यापार और उद्योग जैसे क्षेत्रों में भी अपनी प्रतिभा दिखा सकें.''

कलकत्ता विश्वविद्यालय में अपने नेतृत्व में उन्होंने कई महत्वपूर्ण कार्य किए. इनमें लाइब्रेरी की सुविधाओं में सुधार, विज्ञान मेंरिसर्च को बढ़ावा देना, ऐतिहासिक वस्तुओं के अध्ययन को प्रोत्साहित करना और कृषि से जुड़े पाठ्यक्रम शुरू करना शामिल था. उन्होंने खेलकूद, टीचर्स ट्रेनिंग और स्टूडेंट वेलफेयर जैसे क्षेत्रों पर भी विशेष ध्यान दिया. विद्यार्थियों में अपनी यूनिवर्सिटी के प्रति गर्व की भावना विकसित हो, इसके लिए उन्होंने 24 जनवरी को विश्वविद्यालय का स्थापना दिवस मनाने की परंपरा शुरू की. उन्होंने गुरुदेव टैगोर से विश्वविद्यालय के लिए एक गीत लिखने का अनुरोध भी किया था.

उनके जीवन के बाद के वर्षों में इस भावना का एक और उदाहरण तब देखने को मिला, जब उन्होंने भारतीय जनसंघ बनाने का निर्णय लिया. उस समय देश में हर तरफ कांग्रेस पार्टी का ही बोलबाला था. ऐसे में उन्होंने महसूस किया कि देश को एक ऐसे नए विकल्प की बहुत जरूरत है, जो भारत की प्रगति की बात भी करे और हमारी सांस्कृतिक जड़ों से भी जुड़ा रहे.शायद इसी को ध्यान में रखते हुए पार्टी का चुनाव चिह्न %दीपक% यानि मिट्टी का दीया रखा गया. एक अकेला दीया देखने में भले ही छोटा लगे, लेकिन उसमें अपने आस-पास के गहरे से गहरे अंधकार को मिटाने की अद्भुत शक्ति होती है. जनसंघ ने अपने सक्रिय काल में और उसके बाद भी बिल्कुल यही किया.

डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जीका भारत के पहले उद्योग एवं आपूर्ति मंत्री के रूप में कार्यकाल बेहद अहम रहा. उन्हें एक ऐसे राजनेता के रूप में याद किया जाता है, जिनका विजन बहुत विराट था. वे उद्योग को नए-नए आजाद हुए भारत के लोगों में सम्मान, अवसर और आत्मविश्वास का संचार करने का सशक्त माध्यम मानते थे. वे वेल्थ और वैल्यू क्रिएशन के महत्व को भली-भांति समझते थे. उन्होंने दामोदर वैली कॉरपोरेशन, सिंदरी उर्वरक संयंत्र और मजबूत औद्योगिक नीति जैसी ऐतिहासिक पहल की. इसके माध्यम से आधुनिक औद्योगिक भारत की नींव रखी. इसके साथ ही उन्होंने यह भी सुनिश्चित किया कि भारत के पारंपरिक सामर्थ्य की कभी उपेक्षा न हो. वे हथकरघा, कुटीर उद्योग, कारीगरों और कपड़ा उद्योग से जुड़े श्रमिकों के हितों के भी प्रबल समर्थक थे.

यहां मैं अपना एक निजी अनुभव भी साझा करना चाहता हूं. आत्मनिर्भर भारत के स्पष्ट विजन के साथ जिस सिंदरी संयंत्र की स्थापना के लिए डॉ. मुखर्जी ने अथक प्रयास किए थे, उसकी कई दशकों तक सत्ता में रहने वाले लोगों ने घोर उपेक्षा की. मुझे इस बात का संतोष है कि हमारी सरकार को उसके पुनरुद्धार का सौभाग्य मिला. उस कार्यक्रम में उपस्थित होना मेरे सार्वजनिक जीवन के सबसे विशेष और अविस्मरणीय क्षणों में से एक बन गया.

भारत की प्राचीन परंपरा सदियों से संवाद और विचार-विमर्श का सम्मान करती आई है. डॉ. मुखर्जी इस लोकतांत्रिक भावना के सशक्त प्रतीक थे. उन्होंने पंडित नेहरू के मंत्रिमंडल में शामिल होना इसलिए स्वीकार किया, क्योंकि वे मानते थे कि देश की आजादी के शुरुआती वर्षों में राष्ट्र निर्माण का दायित्व राजनीतिक मतभेदों से कहीं ऊपर है. उन्होंने पूरी निष्ठा और रचनात्मक दृष्टिकोण के साथ अपनी जिम्मेदारियों को निभाया. लेकिन जब उन्हें लगा कि राष्ट्रीय महत्व के कुछ प्रश्नों पर देशहित में अलग मार्ग अपनाना आवश्यक है, तो उन्होंने पूरी गरिमा के साथ अपने पद से इस्तीफा दे दिया. इसके बाद उन्होंने अपना पूरा जीवन उस राजनीतिक लक्ष्य को हासिल करने के लिए समर्पित कर दिया, जिसे वे राष्ट्र के लिए आवश्यक मानते थे.

75 वर्ष पहले पंडित नेहरू पहला संविधान संशोधन लेकर आए. इसे अभिव्यक्ति की आजादी पर सीधा प्रहार माना गया. तब डॉ. मुखर्जी इसके सबसे मुखर आलोचक रहे थे. वे भली-भांति समझ चुके थे कि कांग्रेस किस हद तक जा सकती है. समय के साथ उनकी यह आशंका सही साबित हुई. जो पार्टी 75 वर्ष पहले पहला संविधान संशोधन लेकर आई थी, उसी ने 1975 में देश पर आपातकाल थोपा. इतना ही नहीं, 50 वर्ष पहले 42वां संविधान संशोधन अधिनियम लाकर एक बार फिर लोकतांत्रिक मूल्यों की बुनियाद पर कुठाराघात किया.

डॉ. मुखर्जी अपनी मानवीय संवेदनाओं और सेवाभाव के लिए भी विशेष रूप से जाने जाते हैं. वर्ष 1943 में जब बंगाल भीषण अकाल की त्रासदी से जूझ रहा था, तब उन्होंने पीड़ितों की सेवा में स्वयं को पूरी तरह समर्पित कर दिया था. उन्होंने यह भी सुनिश्चित किया कि लोगों को भोजन मिल सके, जिसके लिए कई कैंटीन और रिलीफ सेंटरशुरू किए गए. एक ओर वे लोगों की पीड़ा से बहुत व्यथित थे, वहीं दूसरी ओर ब्रिटिश हुकूमत की असंवेदनशीलता से अत्यंत आक्रोशित भी थे. उन्होंने अपनी पीड़ा को व्यक्त करने के लिए पंचाशेर मन्वंतर नाम की एक किताब भी लिखी. 1942 में जब मेदिनीपुर में भीषण चक्रवात आया, तब उन्होंने प्रभावित क्षेत्रों में राहत कार्यों का नेतृत्व किया.

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

विंध्य की डायरी

भाजपा में असंतोष को टालने के लिए दिए नए समीकरण

डॉ. रवि तिवारी

पिछले दो-ढाई दशक से सत्ता में काबिज भारतीय जनता पार्टी के अंदर असन्तोष न पनपे इसको लेकर संगठन की नयी कार्यकारणी में जिन चेहरों को अवसर दिया गया है ,उससे जातीय सन्तुलन तो स्पष्ट दिखाई दे रहा है, लेकिन पार्टी के प्रभावी नेताओं को अवसर न मिल पाना आने वाले समय में सत्ता की सीढ़ी के लिए रोड़ा बन सकती है. हालांकि राजनैतिक नियुक्तियों से बचे लोगो को संगठन में शामिल कर पार्टी ने विंध्य में सूझबूझ का परिचय दिया है. पिछले कई वर्षों से सक्रिय राजनीति से दूर लोगो को मुख्यधारा में लाकर पार्टी ने आने वाले समय में उनका उपयोग अभी से सुनिश्चित कर दिया है. प्रदेशाध्यक्ष हेमन्त खण्डेलवाल ने सीधे सभी को कार्यसमिति का सदस्य बना कर विशेष महत्व की सम्भावना को पूरी तरह से समाप्त कर दिया है. जानकारों का कहना है कि आने वाले समय में योग्यता के आधार पर सदस्यों को जिम्मेदारी दी जा सकती है. जानकार यह भी मान रहे हैं कि ये भविष्य में सत्ता के असन्तोष को कम करने में सहयोगी साबित हो सकते हैं.

हाथ से निकल गई सौगात, जिम्मेदार बेखबर

स्मार्ट सिटी सतना को मिलने वाली 20 इलेक्ट्रिक सिटी बसों की सौगात हाथ से निकल गई और जिम्मेदारों को इसकी खबर तक नहीं लगी. रही बात महापौर और सांसद की तो उनको भी भनक नहीं लगी. अब जनता का गुस्सा फूट रहा है. दरअसल बसों की मंजूरी निरस्त होने के फैसले की खबर जिम्मेदार परिवहन विभाग तक को नहीं लगी. सतना महापौर योगेश ताम्रकार और सांसद गणेश सिंह को भी ई-बसों की सौगात छिन जाने की खबर नहीं हुई. इतनी बड़ी सौगात हाथ से निकल जाने पर जनप्रतिनिधियों की भूमिका पर सवाल उठना लाजमी है. अब सतना का हक वापस दिलाने जनता की आवाज उठने लगी है. यह मामला जनभावना से जुड़ा मुद्दा बन गया है. यह केवल ई-बसों का मामला ही नही बल्कि सतना के विकास और उसके अधिकारों की अनदेखी मानी जा रही है. अगर समय रहते जनप्रतिनिधि और जिम्मेदार अधिकारी सक्रिय होते तो यह सौगात बचाई जा सकती थी. मई के महीने में ही बसों का आवंटन रद्द कर दिया गया था, लेकिन सभी जिम्मेदार चुप्पी साधे बैठे रहे. एक तो बड़ी सौगात मिल नहीं रही और जो आ रही है वह भी हाथ से निकल रही है. ऐसे में जिम्मेदारों की निष्क्रियता पर सवाल तो उठेगा ही.

'सामंतवादी' पोस्ट पर हाथापाई

कांग्रेस पार्टी की अंदरूनी कलह थमने का नाम नही ले रही है. अनुशासन एवं एकता का पाठ केवल मंचों और भाषणों तक ही सीमित रह गया है. कार्यकर्ता पार्टी के सिद्धांतों पर बहस करने के बजाय नेताओं की टिप्पणी पर पहरा देने लगे है. पार्टी के प्रति समर्पित कार्यकर्ता पहले होते थे पर अब नेताओं के प्रति समर्पण भाव रखते हैं. हाल ही में सीधी विधानसभा के प्रभारी डा. विनोद शर्मा के साथ कथित रूप से हाथापाई इसी का परिणाम है. दरअसल 'सामंतवाद' को लेकर सोशल मीडिया पर की गई एक टिप्पणी ने विवाद की स्थित निर्मित कर दी. संगठन ने बगैर समय गवाए अति-उत्साही दो कार्यकर्ताओं को बाहर का रास्ता दिखा दिया. अब सवाल यह उठता है कि क्या समय रहते संवाद स्थापित कर आपत्ति वाले शब्दों पर विचार-विमर्श कर विवाद को शांत कराने का प्रयास नहीं किया जा सकता था? संगठन द्वारा की गई कार्यवाई क्या समाधान है या फिर उसके पीछे के कारणों संवाद की कमी और संगठनात्मक समन्वय पर भी उतनी ही गंभीरता से विचार होना चाहिये. निश्चित रूप से दृष्टिकोण बदलने की आवश्यकता है. कार्यवाई संगठन का एक हिस्सा हो सकती है लेकिन आत्ममंथन उससे भी अधिक आवश्यक है. कांग्रेस के अंदर आपसी संवाद की कमी लगातार हो रही है. यही वजह है कि आपसी गुटबाजी से कांग्रेस उभर नहीं पा रही है.

निशानेबाज

भूल गए सारे आचार-विचार, किया भयंकर भ्रष्टाचार

पड़ोसी ने हमसे कहा, 'निशानेबाज, हिंदी में चंपत, रफूचक्कर और नौ दो ग्यारह जैसे शब्दों का एक ही अर्थ है. श्री रामजन्म भूमि ट्रस्ट के चंपत राय के लिए कहा जा सकता है- भोली सूरत दिल के खोटे, नाम बड़े और दर्शन छोटे ! राममंदिर में केंद्रीय सुरक्षा बल, राज्य की पुलिस तैनात होने के बावजूद चंपत राय के लिए 400 निजी सुरक्षा गार्ड लगाए गए फिर भी सैकड़ों करोड़ रुपए के चढ़ावे का घोटाला हो गया. हीरे, सोने-चांदी के आभूषण जमीन खा गई या आसमान निगल गया ? ये गार्ड उस रूट पर भी तैनात रहते थे जहां से पैसा बैंक जाता था. बीजेपी के पूर्व सांसद की एजेंसी के इन सिक्योरिटी गार्ड को प्रतिमाह 1 करोड़, इस तरह सालभर में 12 करोड़ रुपए वेतन दिया जाता था ताकि वे चंपत राय को प्रोटेक्शन देते रहें. यह रकम कहां से आती थी? जिस रास्ते से चढ़ावे को रफा-दफा किया जाता था, वहां कोई झांक

भी न पाए इसकी निगरानी ये गार्ड करते थे.'

हमने कहा, 'संत तुलसीदास ने रामायण में लिखा-समरथ को नहीं दोष गुसाईं' अर्थात जिसके पास ताकत, सत्ता या पॉवर है उसे कोई दोषी नहीं कह सकता. चढ़ावे के नोटों की गिनती करनेवाले 50 कर्मचारी संदेह के घेरे में हैं जो मामूली औकात के लोग थे लेकिन देखते ही देखते करोड़पति हो गए और उन्होंने खूब प्रापर्टी बना ली. ट्रस्ट का एक अर्थ होता है विश्वास लेकिन मंदिर के ट्रस्ट पर विश्वास तार-तार हो चुका है जिसे भंग किया जाना चाहिए. बगैर एफआईआर एसआईटी बिठा दी गई. इसलिए सजा कैसे होगी?'

पड़ोसी ने कहा, 'निशानेबाज, कहते हैं महाकुंभ के दौरान हर दिन 10-15 लाख रुपए का चढ़ावा पार कर दिया गया. अनेक वर्षों से चल रही चढ़ावा चोरी के बाद भी सीबीआई और ईडी जैसी एजेंसियों की इस पर निगाह नहीं गई या उन्हें वहां जांच करने का निर्देश नहीं दिया गया.' पड़ोसी ने कहा, 'निशानेबाज, ऐसा लगता है कि इस प्रकरण में छोटे-मोटे प्यादों को बलि का बकरा बनाया जाएगा और लूट के सूत्रधार बच निकलेंगे. प्रधानमंत्री मोदी ने मंदिर का शिलान्यास, उद्घाटन, प्राणप्रतिष्ठा और रामलला की पहली पूजा की लेकिन वह इस चढ़ावा लूट पर एक शब्द भी नहीं बोल रहे हैं.' हमने कहा, 'महात्मा गांधी ने सिखाया था बुरा मत बोलो, बुरा मत देखो और बुरा मत सुनो. मोदी-शाह इसलिए मौन हैं.'

शब्द-सागर : डॉ. सागर खादीवाला

CROSS WORD 12309 - डॉ. सागर खादीवाला

1	2	3	■	4	5	■	6
7			■	8		9	
	■	10	11	■	12		
13	14			15	■		■
■		■	16		■	17	18
19		20		■	21	■	
22			■	23		24	
■	25				■	26	

बाएं से दाएं
1. कई, बहुत, एक से अधिक 4. द्वार, विदारण, भाव 7. नौकर, सेवक 8. झरोखा, खिड़की (सं.) 10. अंधकार, अंधेरा, पाप 12. दूर करने या हटाने वाला, नष्ट करने वाला 13. कान में कही गई बात 16. रहित, तुच्छ, शून्य 17. दांत (सं.) 19. किसी को बुलाने का काम, निमंत्रित करना 22. प्रात:काल, सवेरा 23. विनिष्ट या बर्बाद करना 25. जिसमें नमक जैसा स्वाद हो, नमक डालकर बनाया हुआ पकवान 26. मिट्टी, धूल

ऊपर से नीचे
1 अकस्मात, सहसा, बिना पूर्व सूचना के 2. अच्छा, भला, सज्जन, उत्तम 3. करामात, काम, हुनर 4. औषध, उपचार, इलाज 5. रत होना, किसी को अपनी ओर करना 6. चमक-दमक, शोभा 9. कीर्तिकारक 11. मूर्ख, बुद्धिहीन (सं.) 14. शिव 15. विमान, किसी भी तरह की सवारी (सं.) 18. करुणाजनक 19. आशा, भरोसा 20. अंत:पुर, जनानखाना 21. पशु-शावक, बच्चा 23. बगैर छोड़कर 24. साथी, सहयोगी, मित्र

Solution 12308

मो	ति	या	बिं	द	■	आ	स
ल	त	■	ब	■	का	य	र
तो	■	सा	फ	गो	ई	■	ग
ल	वं	ग	ल	ता	■	आ	म
■	श	र	■	खो	द	ना	■
अं	■	वा	न	र	■	का	का
त	क	सी	म	■	पु	नी	त
र	क्षा	■	क	म	ल	■	र

ज्योतिषाचार्य पंडित प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारंभ में व्यवसायिक कार्यों में परिश्रम अधिक करना पडेगा. व्यय और संतान की चिन्ता से मन अशांत रहेगा. वाणी में कठोरता तथा प्रियजनों के प्रति उदासीनता रहेगी. मान सम्मान के प्रति सचेत रहें. वर्ष के मध्य में सत्ता पक्ष से सुख मिलेगा. प्रभाव बना रहेगा. राजकीय सम्मान की प्राप्ति का योग है. वर्ष के अन्त में प्रतिष में वृद्धि होगी. भाईयों का सहयोग रहेगा. नवीन कार्यो के प्रति रूचि रहेगी.

मेष और वृश्चिक राशि के व्यक्तियों को मान प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी. भाईयों का सहयोग मिलेगा. वृष और तुला राशि के व्यक्तियों के लिये व्यवसायिक कार्यो में परिश्रम अधिक करना पडेगा. कर्क राशि के व्यक्तियों को सत्ता पक्ष से लाभ मिलेगा. सिंह राशि के व्यक्तियों को संतान पक्षर की चिन्ता रहेगी. मकर और कुंभ राशि के व्यक्तियों को नियमितता का ध्यान रखना होगा. मिथुन और कन्या राशि के व्यक्तियों को लाभ प्राप्ति का योग है. धनु और मीन राशि के व्यक्तियों को स्वास्थ्य संबंधी पीड़ा हो सकती है.

आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक स्वाभाव से अच्छा सुन्दर, हष्टपुष्ट तथा सुशील तथा मिलनसार होगा. मन भावुक तथा कोमल होगा. कम बोलेगा, तथा जोभी बात बोलेगा, वह बुद्धिमानी से परिपूर्ण होगी. पिता का भक्त होगा.

उदयकालीन ग्रह चाल

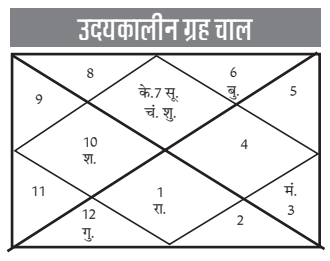

पंचांग

रा.मि. 15 संवत् 2083 आषाढ कृष्ण षष्ठी चन्द्रवासरे दिन 9/26, पूर्वाभाद्रपद नक्षत्रे दिन 12/49, सौभाग्य योगे दिन 1/27, वणिज करणे सू.उ. 5/14, सू.अ. 6/46, चन्द्रचार कुम्भ प्रात: 6.45 से मीन, शु.रा. 12,2,3,6,7,10 अ.रा. 1,4,5,8,9,11 शुभांक- 5,7,1.

व्यापार भविष्य

आषाढ कृष्ण षष्ठी को पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र के प्रभाव से गुड़, खांड़, रूई, शक्कर, कपास,जूट, पाट, बारदाना, सन, हैसियन,सोना, चांदी, के भाव में उठाल आयेगा. भाग्यांक 4110 है.

मेष- पारिवारिक आयोजन लाभकारी हो सकते है. आकस्मिक लाभ की सूचना मिलेगी. मानसिक प्रसन्नता रहेगी. कोर्ट कचहरी के कार्यो में सफलता प्राप्त होगी.

वृषभ- अपने कार्य को वरीयता से निपटाने का प्रयास करें, अन्यथा परेशानियां सामने आयेंगी. वरिष्ठ लोगों के संपर्क से लाभ होगा. भाग्यवर्धक समाचार मिलेगा.

मिथुन- वैभव के सामान पर बड़े खर्च की संभावना है. स्वजनों के सहयोग से आर्थिक कार्य पूर्ण होगा. मनोरंजन उत्साह बढ़ेगा. मेहनत अधिक करना पड़ेगी.

कर्क- नए कार्य की शुरूआत और कानूनी मामलों में सबकी सलाह से वृषभे बढ़े, सफलता मिलेगी.आकस्मिक प्रवास हो सकता है.

सिंह- धार्मिक कार्यो में व्यस्तता रहेगी. नये संपर्कों का लाभ मिलेगा. महत्वपूर्ण कार्यो में सफलता मिलगी. श्रेष्ठजनों से कामकाज बनने का योग है.

कन्या- प्रतियोगी परीक्षा में सफलता के आसार हैं, विवादास्पद मामले सुलझ सकते हैं. स्वास्थ्य अच्छा रहेगा. कार्यो में आकस्मिक गति आयेगी. मन में प्रसन्नता रहेगी.

तुला- दूसरों के मामले में दखल से बचें. अटके कार्य पूराकरने में मित्रों का सहयोग मिलेगा. संतान आदि की चिन्ता दूर होगीं सुखदकार्यों में लाभ प्राप्त होगा.

वृश्चिक- भाग्यवर्धक अवसर मिलेंगे. दिनचर्या व्यवस्थित रहेगी. परिश्रम अधिक करना होगा. आप जिन पर भरोसा कर रहे हैं, वे आपका विरोध करेंगे.

धनु- खानपान रहन सहन में अनियमितता रहेगी. उदर विकार आदि से कष्ट होगा. समय के स्वरूप को देखकर कार्य करें. कार्यों में सफलता मिलेगी.

मकर- आपके सरल स्वाभाव का लोग फायदा उठायेंगे. व्यापार व्यवसाय में सफलता मिलेगी. जीवनसाथी का सहयोग रहेगा. मानसिक प्रसन्नता रहेगी.

कुम्भ- आपका कठोर व्यवहार घर में कलह का कारण बन सकता है. नई योजना लाभकारी रहेगी. आकस्मिक अतिथि वृषभमन होगा. पार्टनरशिप में सतर्कता बांछनीय.

मीन- अधूरी योजना फिर से शुरू कर सकते हैं. बुजुर्गों के मार्गदर्शन से लाभ मिलेगा. मातृपक्ष से शुभ समाचार मिलेगा. कार्यो मे सफलता मिलेगी. संयम से काम लें.

SUDOKU 7441

4			9		6	1		8
6	8							
	1	7	3	8		4		
3	4		6		7			9
5		1	8			2		7
2			5		1		8	4
		3		7	5	8	6	
							9	5
7		6	2		8			1

g प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक है. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें. g पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. g पहेली का केवल एक ही हल है.

नवभारत सू-दोकू 7440

2	9	8	3	5	6	1	7	4
4	5	3	2	1	7	9	8	6
7	1	6	4	8	9	2	5	3
8	2	5	6	9	1	3	4	7
3	6	4	7	2	5	8	1	9
1	7	9	8	3	4	5	6	2
5	4	1	9	7	2	6	3	8
6	3	2	1	4	8	7	9	5
9	8	7	5	6	3	4	2	1